

श्री जलाराम प्रॉपर्टी डीलर

उचित दर पर मकान, फ्लैट, डुप्लेक्स,
दुकान, ऑफिस, गोदाम, जीन, लाइट की
खरीदी-बिक्री हेतु संपर्क करें।

ऑफिस- बागड़ी बादरे के बाजू में, रामधीन मार्ग, राजनांदगांव।

मो: 98274-61508, 83192-88559



नोट : मकान, फ्लैट, दुकान,
गोदाम विक्रये ले था देश
की विवेष व्यवस्था ताक ही
जीन व्यापार हेतु इवानके
दलालज व ऋण पूरिता करनाने
के कारण को सुनिश्चित।

नांदगांव टाइम्स

शुक्रवार, 07 फरवरी 2025, राजनांदगांव

आरएनआई 30910/76

वर्ष 49, अंक 115, पृष्ठ 04, मूल्य 3 रुपए

दिगम्बर जैन आचार्य विद्यासागर महाराज केवल एक संत एवं जैनाचार्य नहीं बल्कि युग पुरुष थे : केन्द्रीय गृह और सहकारिता मंत्री भारत सरकार शाह

**केन्द्रीय गृह और
सहकारिता मंत्री भारत
सरकार अमित शाह एवं
मुख्यमंत्री विष्णु देव साय
डॉगरगढ़ स्थिति चंद्रगिरि
तीर्थ में विनायंगलि समारोह
में हुए शामिल**

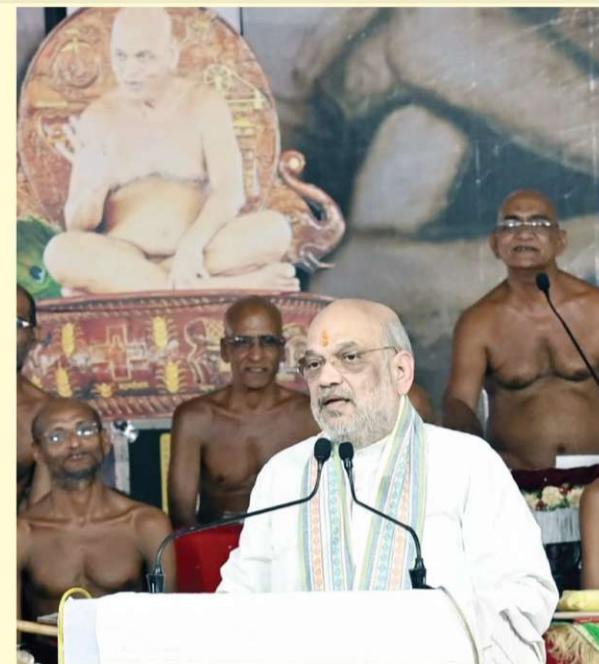
- आचार्य विद्यासागर

महाराज ऐसे विलो व्यक्तित्व
जिन्होंने राष्ट्र के लिए किया
जीवन समर्पित

- आचार्य विद्यासागर

महाराज की स्मृति में 100
रुपए का सिक्का तथा उनके
जीवन कंवल को वर्णित
करने वाले स्पीशल कव्हर
डॉक लिफाफा का किया
गया विमोचन

राजनांदगांव (नांदगांव टाइम्स)। केन्द्रीय गृह और सहकारिता मंत्री भारत सरकार अमित शाह एवं मुख्यमंत्री विष्णु देव साय डॉगरगढ़ स्थिति चंद्रगिरि तीर्थ में विनायंगलि समारोह में शामिल हुए। इस अवसर पर उन्होंने यहां काव्यांजलि देने के लिए आवश्यक मिला है। आचार्य विद्यासागर ने यहां अंतिम साधना कर इस स्थान को समाधि के लिए पसंद किया। एक वर्ष बाद यहां काव्यांजलि देने के लिए आवश्यक अवसर मिला है। दिगम्बर जैन आचार्य विद्यासागर महाराज केवल एक संत नहीं, जीवाचार्य नहीं, युग पुरुष थे। उन्होंने नवे विचार एवं युग का प्रवर्तन किया। उनकी तप साधना की तथा भारतीय संस्कृति, कर्मों के ज्योतिर्पुंज बने तथा देश की पहचान को विश्व में व्याख्याति किया। उनके साथ बिताए हुए यादों का स्मरण करते हुए उन्होंने कहा कि दिगम्बर जैन आचार्य विद्यासागर महाराज को अनुकरण किया। जिससे विश्व अवधित हो गया। भारतीयता के भक्त इससे आलहादित एवं आनंदित थे। इस अवसर पर गृह



राजनांदगांव (नांदगांव टाइम्स)। केन्द्रीय गृह और सहकारिता मंत्री भारत सरकार अमित शाह एवं मुख्यमंत्री विष्णु देव साय डॉगरगढ़ स्थिति चंद्रगिरि तीर्थ में विनायंगलि समारोह में शामिल हुए। इस अवसर पर उन्होंने यहां काव्यांजलि देने के लिए आवश्यक मिला है। आचार्य विद्यासागर ने यहां अंतिम साधना कर इस स्थान को समाधि के लिए पसंद किया। एक वर्ष बाद यहां काव्यांजलि देने के लिए आवश्यक अवसर मिला है। दिगम्बर जैन आचार्य विद्यासागर महाराज को अनुकरण किया। जिससे विश्व अवधित हो गया। भारतीयता के भक्त इससे आलहादित एवं आनंदित थे। इस अवसर पर गृह

